मरीना त्स्वेतायेवा

मरीना त्स्वेतायेवा

अँग्रेज़ी से अनुवाद : प्रत्यूष पुष्कर

एक

चलो सही है : तुम लोगों ने मुझे खा लिया है
मैं—तुम्हें लिखती हूँ
वह तुम्हें डिनर की टेबल पर बिछाते हैं
मुझे इस डेस्क पर

मैं कम से ही ख़ुश रही हूँ
व्यंजन हैं जिन्हें मैंने कभी चखा नहीं है
लेकिन तुम, तुम लोग धीरे-धीरे खाते हो
और बराबर खाते हो
तुम खाते हो और खाते हो

हमारे लिए सब निर्धारित था
पीछे समुद्र में ही :
हमारे कार्य की जगहें,
हमारी कृतज्ञता की जगहें

तुम डकारों के साथ,
मैं किताबों के साथ,
तुम ट्रफ़ल के साथ,
मैं पेंसिल के साथ
तुम और तुम्हारे ऑलिव,
मैं और मेरी तुकबंदियाँ
अचार के साथ तुम, मैं, संग कविताओं के

तुम्हारे सिरहाने—अंतिम संस्कार की मोमबत्तियाँ
जैसे मोटे डंठल वाली—शतावरी
तुम्हारी सड़कें इस दुनिया से बाहर की
रेगिस्तान की मेज़ पर स्ट्राइप वाला कपड़ा

वह हवाना-सिगार फूँकेंगे
तुम्हारी बाईं तरफ़, तुम्हारी दाहिनी तरफ़
तुम्हारी देह सजाएँगे
सर्वोत्तम डच लिनेन में
और इतने महँगे कपड़े को बर्बाद न करने के लिए,
वे तुम्हें झाड़ेंगे,
खाने के टुकड़े चूरे के साथ,
कुंड में, क़ब्र में।

तुम भरवाँ मुर्ग़ी, मैं कबूतर
बारूद तुम्हारी आत्मा, शवपरीक्षा में
मुझे नग्न लिटाया जाएगा
केवल दो पंख मुझे ढकने के लिए।

दो

मैं सरलता से जीती हुई ख़ुश हूँ :
एक घड़ी या एक कैलेंडर की तरह

सांसारिक पथिक, पतले,
बुद्धिमान—किसी भी जीव की तरह
यह जानती
रूह मेरी प्रेमी है
चीज़ों तक पहुँचती—तेज़
रौशनी की कोई किरण, या एक नज़र की तरह।

तीन

वैसे जीती जैसे मैं लिखती : छोड़ो—रास्ता
ईश्वर माँगता है मुझसे—और मित्र नहीं माँगते
माथे पर एक चुंबन—संताप मिटाती
मैं तुम्हारा माथा चूमती हूँ।

तुम्हारी आँखों पर एक चुंबन—अनिद्रा भगाती
मैं तुम्हारी आँखें चूमती हूँ

होंठों पर एक चुंबन—एक घूँट पानी है
मैं तुम्हारे होंठ चूमती हूँ

माथे पर एक चुंबन—स्मृति मिटाती।

काला पहाड़
पृथ्वी का प्रकाश रोकता है।
समय-समय-समय
ईश्वर को उसका टिकट वापस करने के लिए।

मैं इनकार करती हूँ—होने से
अमानवों के पागलख़ाने में
मैं इनकार करती हूँ—जीने से
तैरने से

मानुष-रीढ़ की धार पर,
मुझे कानों में छेद की जरूरत नहीं,
देखने वाली आँखों की नहीं

मानुष-रीढ़ की धार पर तैरने से इनकार करती हूँ
तुम्हारी पागल दुनिया से—एक उत्तर : मैं इनकार करती हूँ।

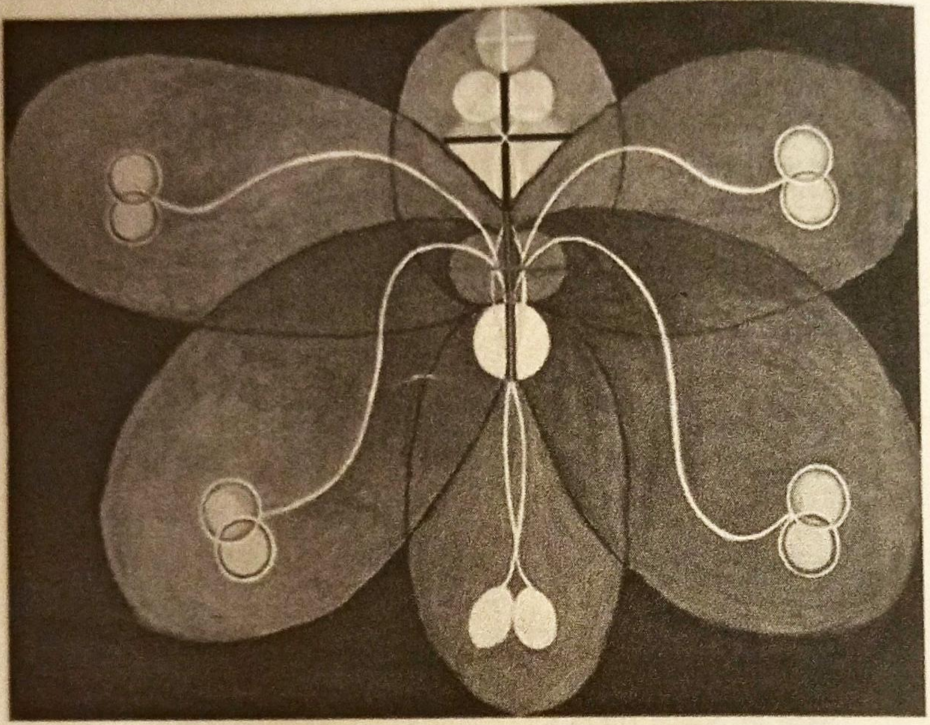

हिल्मा ऑफ़ क्लिंत की कृति

चार

उन्होंने छीन लिया—अचानक से—और खुलेआम—
छीने पहाड़ और उनकी अंतड़ियाँ छीन लीं,
उन्होंने कोयला छीना, और स्टील ले लिया उन्होंने,
सीसा छीना और बिलौरे।

और उन्होंने चीनी छीनी, और तिपतिया छीन लिया,
उन्होंने पश्चिम छीना, और उन्होंने उत्तर छीन लिया,
मधुमक्खी के छत्ते छीने, और पुआल के ढेर छीन लिए,
उन्होंने हमसे दक्षिण छीना, और पूरब छीन लिया।

वारी उन्होंने छीना और तत्रास उन्होंने छीन लिया
हमारी उँगलियाँ छीनीं, हमारे दोस्त छीन लिए

लेकिन हम खड़े होते हैं
तब तक जब तक हमारे मुँह में थूक है!

***

मरीना त्स्वेतायेवा (1892–1941) सुप्रसिद्ध रूसी कवयित्री हैं। मरीना ने कविताओं के साथ-साथ काव्य-नाटक और गद्य (जिनमें उनके पत्र और डायरियाँ शामिल हैं) भी लिखा। उन्होंने 1912 में सेर्गेई एफ्रोन से शादी की। उनकी दो बेटियाँ हुईं और फिर एक पुत्र। एफ्रोन के वाइट आर्मी ज्वाइन करने के बाद मरीना उनसे सिविल वार के दौरान अलग हो गईं। इसके बाद उनका ओसिप मान्देल्स्ताम के साथ एक छोटा प्रेम-प्रसंग चला, और बाद में वह इसी अंक में प्रस्तुत पहली कवयित्री सोफ़िया पार्नोक के साथ एक लंबे रिश्ते में रहीं। मास्को अकाल के दौरान मरीना को अपनी बेटियों को एक अनाथालय में रखने के लिए मजबूर किया गया, जहाँ छोटी बेटी इरिना की मृत्यु 1919 में भूखमरी से हो गई। 1922 में वह अपने परिवार के साथ फिर बर्लिन चली गईं और फिर प्राग। अंततः वह 1925 में पेरिस में आकर बस गईं। 1939 में मरीना सोवियत यूनियन वापस लौटीं। एफ्रोन को मृत्युदंड दिया गया और उनकी बड़ी बेटी को लेबर कैंप में भेज दिया गया। जब जर्मनी ने सोवियत संघ पर हमला किया, तब मरीना को उनके बेटे के साथ येलाबुगा भेज दिया गया। 31 अगस्त 1941 को उन्होंने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

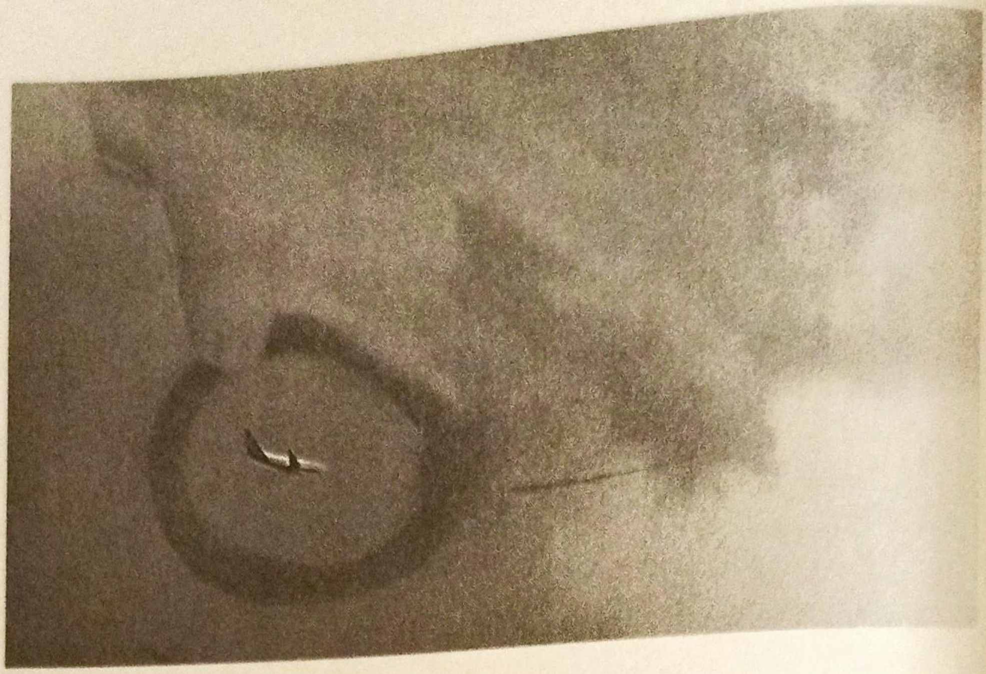

आभार

'सदानीरा' के वसंत 2021 क्वियर अंक के संभव का एक कोमल नेपथ्य है। साल 2019 के प्राइड के दुमछल्ले, साथ-साथ चलते, हम 'हिंदी के दोस्तों' का एक साझा प्रयास। दूर देश में बैठे हिंदी पहचानते और जेंडर (लिंग) की नाटकीयता के प्रति सजग कलाकार और कवि, भविष्य की सहजता-कोमलता को साँस मानती कविता, कला, कहानी और दर्शन की धाराएँ और सस्नेह उपस्थित 'एलाय' (ally)।

'सदानीरा' के संपादकों ने हमें इस अंक के लिए स्वतंत्रता और हर संभव सहयोग दिया, और हमने जिनसे-जिनसे शामिल होने की दरख़्वास्त की, हम उनकी इनायत से विनम्र हुए। कोरोना के कारण अंक के आने में एक वर्ष का जो विलंब हुआ, वह हम सबके लिए किसी भाव-पल्लवन का समय रहा। बीते सवा साल में अंक ने तीन आवरण बदलकर देखे, कुछ और नए कवि-कलाकार जुड़े, एक बड़ा हिस्सा रहने दिया, और कई नए अनुवाद प्राप्त हुए। इस अंक के साथ बिताए इस समय ने हमें लगातार पुनर्जांच करना और हमारे निजी विमर्श और व्यवहार का क्वियर-साम्य सिखाया। अंक के विभिन्न चयन की असीमितता और कवितापरक कलात्मक आग्रह हमारे लिए 'सदानीरा' की आकांक्षा रही है।

हमारी वर्तमान राजनीति में अंतर्निहित सेक्सुअल घृणा इस अंक का एक दुःख और इस अंक का एक सुख जो संभव हो सका उसका अंततः प्रिंट में होना हुआ।

हम इस अंक में प्रस्तुत प्रत्येक रचनाकार-कलाकार और मददगार के प्रति अपना आभार अभिव्यक्त करते हैं, और हिंदी में क्वियर से यह संवाद सहज हो, इसी विश्वास के संग क्वियर हम इस अंक को सँजोते हैं।

— रिया रागिनी – प्रत्यूष पुष्कर